P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-5* August- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जनपद पौड़ी गढ़वाल के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं के हिन्दी भाषाई कौशल स्तर सम्प्राप्ति लक्ष्यानुसरण का समालोचनात्मक अध्ययन

एस. के. लखेड़ा
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षा संकाय विभाग,
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड

अरविन्द
प्रवक्ता,
शिक्षा संकाय विभाग,
डी0 आर0 यू0 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
चड़ीगांव, पौड़ी, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड

सारांश

भारत एक धर्म निरपेक्ष सम्प्रभूता सम्पन्न राष्ट्र है किसी भी राष्ट्र की नींव वहाँ की शिक्षा व्यवस्था होती है और इसमें भी प्राथमिक शिक्षा को विशेष महत्व है। प्राथमिक शिक्षा के द्वारा ही देश के कर्णधार पैदा करने का प्रयास प्रारम्भ होता है और इसमें में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है–राष्ट्र भाषा जो कि हमारे प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों को शिक्षित करने की अहम कड़ी है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में संवर्धन करने हेतु हिन्दी भाषाई कौशल स्तरों के लक्ष्यानुसरण (Child Achievement Tracking) करने की आवश्यकता महसूस की गई है–

इसकी गुणवत्ता को देखते हुए केन्द्र सरकार ने इसे अपनाकर पूरे राष्ट्र में प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। भारत में इस कार्यक्रम को प्रारम्भ करने का श्रेय उत्तराखण्ड राज्य को जाता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने जनपद पौड़ी गढ़वाल के संदर्भ में इस संकल्पना को समझने का प्रयास किया।

मुख्य शब्द : राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बालक–बालिका, हिन्दी भाषाई कौशल स्तर, सम्प्राप्ति लक्ष्यानुसरण।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा वस्तुतः सभी के लिए है तथा यह हमारे सर्वांगीण विकास का मूलभूत आधार है। शिक्षा की भूमिका मानव जीवन को उत्कर्षता प्रदान करने में निहित है। यह मानव संवेदनशीलता एवं अभिज्ञान का परिष्कार करके राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक प्रकृति, मस्तिष्क एवं आत्मा की स्वतंत्रता का विकास करती है जो हमारे संविधान में उल्लिखित लक्ष्यों की पुष्टि करती है साथ ही यह राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता के मूलमन्त्र का शोध एवं अभिवृद्धि है। इसी संकल्पना के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय पाठ्य चर्चा 2005 के अनुसार सभी बच्चे तीन वर्ष की आयु से पूर्व न केवल अपनी भाषा की मूलभूत संरचनायें और उपसंरचनायें सीख जाते है, बल्कि वे यह भी सीख लेते हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में इनका किस प्रकार उचित प्रयोग करना है। (उदाहरण के लिए वे केवल भाषायी दक्षता नही, बल्कि संम्प्रेषण की दक्षता भी सीखते हैं)। तीन वर्ष के बच्चों के संज्ञानात्मक क्षेत्र में आने वाले किसी भी विषय पर उसके साथ सार्थक बातचीत की जा सकती है। अतः यह स्वाभाविक है कि समृद्ध और संवेदनशील अवसरों वाले बच्चों के अलावा सामान्य बच्चे जन्मजात नैसर्गिक भाषा क्षमता के साथ जन्म लेते है। परन्तु प्रत्येक भाषा विशेष प्रकार के सामाजिक सांस्कृतिक और राजनैतिक सन्दर्भ में अर्जित की जाती है। प्रत्येक बच्चा यह सीखता है कि क्या कहना है, किसे कहना है, कहाँ कहना है।

लम्बे समय से हम भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की बात सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने के कौशलों के सन्दर्भ में करते रहे हैं। भाषा शिक्षण में पृथक–पृथक कौशलों पर बल देने से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नही हुए है। अतः भाषाई निपुणता को सम्यक और समग्र परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। क्योंकि बोलने के साथ–साथ हम सुनते है और जब हम लिखते हैं तो हम कई अर्थो में पढ़ते भी है। इसके अतिरिक्त ऐसी स्थितियाँ भी होती हैं। जब हम इन चारों कौशलों और अन्य अनेक संज्ञानात्मक क्षमताओं का एक साथ प्रयोग करते है, जैसे कुछ लोगों द्वारा किसी नाटक को इकट्ठा पढ़ना और उसके मंचन के लिए कुछ आधारभूत बिन्दु लिखना, जिनकी आवश्यकता उन स्थितियों में होती है।

जब हम उच्च स्तर की भाषा सम्बन्धी सम्प्राप्ति प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होते है तब हम जीवन सम्बन्धी आलोचनात्मक चिन्तन का कौशल, तालमेल करने का कौशल मना करने का कौशल और परिस्थितियों से निपटने तथा स्वयं के समायोजन आदि के कौशलों का रोजमर्रा के जीवन की चुनौतियों और मांगों के सन्दर्भ में इसके महत्व को महसूस करते है।

सम्बन्धित साहित्य

गुप्ता.एस (1998) ने 'कक्षा 02 के विद्यार्थियों की भाषा के अधिगम कठिनाई की प्रकृति के अध्ययन' में पाया कि बच्चे शब्दों तथा वाक्यों को पहचानने में भी बहुत सी त्रुटियाँ करते हैं एवं पढ़ने के कौशल की तुलना में भी छात्रों का सुनने का कौशल अपेक्षाकृत अच्छा है। दवे अर्चना (1997) ने अपने अध्ययन में पाया कि 'कक्षा 5 एवं 6 के विद्यार्थियों में सीधे शब्द दोहराने की प्रक्रिया तीव्र हैं। शशिकला (1999) ने अपने अध्ययन् 'हिन्दी भाषाई कौशल पर एक अध्ययन' में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि उच्च प्राथमिक तथा हाईस्कूल स्तर पर ''रोलप्ले'' द्वारा मौखिक भाषाई कौशलों का विकास होता है।

उद्देश्य

जनपद पौड़ी गढ़वाल के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 के बालक–बालिकाओं की हिन्दी भाषागत विभिन्न कौशलों यथा– सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना सम्बन्धी पृथक–पृथक कौशल सम्बन्धी दक्षता के स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'सुनना' में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'बोलना' में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'पढ़ना' में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'लिखना' में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमाऐं

प्रस्तुत अध्ययन जनपद पौड़ी गढ़वाल के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं तक सीमित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग कर जनपद पौड़ी गढ़वाल के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा–03 हिन्दी भाषा के बालक–बालिकाओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया है, जिसमें 75 बालक एवं 75 बालिकाएं है इस प्रकार कुल 150 बालक–बालिकाओं का न्यादर्श लिया हैं।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अधोलिखित शोध उपकरणों को शोधार्थी द्वारा विकसित करके उनको प्रमापीकृत किया गया है–

1. सुनना (हिन्दी) कौशल आकलन प्रश्नावली (LSAQ) Learning Skill of Assessment Question.
2. बोलना (हिन्दी) कौशल साक्षात्कार प्रपत्र (SAIS) Speech Assessment Interview Scale.
3. पढ़ना (हिन्दी) कौशल आकलन प्रश्नावली (RSAQ) Reading Skill Assessment Questionear
4. लिखना (हिन्दी) कौशल आकलन प्रश्नावली (WSAQ) Writing Skill Assessment Questionear

सांख्यिकीय प्रविधियां

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सांख्यिकीय परिणाम सारणी 1, 2, 3 एवं 4 के अन्तर्गत प्रस्तुत किये गये हैं।

राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर–'सुनना' के आंकड़ों का विवरण सारणी संख्या 01 में दिया जा रहा है।

सारणी संख्या 01

राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'सुनना' का विवरण

आयाम अनुदेशन विधि	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (sd)	स्वत्रांश (df)	टी परीक्षण (t)
बालक	75	45.24	5.75	148	2.97'
बालिका	75	47.49	4.95		

प्राप्त टी मूल्य (2.97') 0.01 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 01 के परिणामों से विदित होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 के बालिकाओं का भाषा हिन्दी का कौशल स्तर– 'सुनना' का मध्यमान (M= 47.49) राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 के बालकों का भाषा हिन्दी का कौशल स्तर– 'सुनना' के मध्यमान (M= 45.24) से अधिक है। टी–परीक्षण के मान (t=2.97) में 0.05 एवं 0.01 दोनो स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया।

सांख्यिकीय आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 भाषा हिन्दी की बालिकाओं की सुनने की क्षमता राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 भाषा हिन्दी के बालकों से अधिक श्रेष्ठ है। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 03 भाषा हिन्दी की बालिकाओं ने कक्षा के पठन–पाठन में शिक्षक के शब्दों को ध्यान पूर्वक सुना।

राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर–'बोलना' के आंकड़ों का विवरण सारणी संख्या 02 में दिया जा रहा है।

सारणी संख्या 02
राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'बोलना' का विवरण

आयाम अनुदेशन विधि	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (sd)	स्वत्रांश (df)	टी परीक्षण (t)
बालक	75	46.46	4.51	148	2.48′
बालिका	75	44.22	6.38		

प्राप्त टी मूल्य (2.48′) 0.01 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 02 के परिणाम से ज्ञात होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 के बालिकाओं का भाषा हिन्दी का कौशल स्तर 'बोलना' का मध्यमान (M= 44.22) राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 के बालकों का भाषा हिन्दी का कौशल स्तर– 'बोलना' का मध्यमान (M= 46.46) से न्यून है एवं टी–परीक्षण के मान (t=2.48) में 0.01 एवं 0.05 विश्वास के दोनों स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया।

सांख्यिकीय आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 भाषा हिन्दी की बालिकाओं की 'बोलने' की क्षमता प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 भाषा हिन्दी के बालकों से न्यून है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 03 भाषा हिन्दी की बालिकाएं घर के वातावरण, सामाजिक दबाव एवं रूढ़ीगत व्यवस्था के अनुसार बोलने में हीनता महसूस करती है।

राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर – 'पढ़ना' के आंकड़ों का विवरण सारणी संख्या 03 में दिया जा रहा है।

सारणी संख्या 03
राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर पढ़ना'' का विवरण

आयाम अनुदेशन विधि	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन ¼sd)	स्वत्रांश (df)	टी परीक्षण (t)
बालक	75	45.56	6.40	148	4.70′
बालिका	75	50.02	5.82		

प्राप्त टी मूल्य (4.70′) 0.01 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 03 के परिणाम से ज्ञात होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 के बालकों का भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'पढ़ना' का मध्यमान (M= 6.40), राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 की बालिकाओं की भाषा हिन्दी का कौशल स्तर– 'पढ़ना' का मध्यमान (M= 50.02) में अपेक्षाकृत अधिक अंक प्राप्त किये है एवं टी–परीक्षण के मान (t=4.70) में 0.01 एवं 0.05 विश्वास के दोनों स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया।

सांख्यिकीय आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 03 बालकों की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'पढ़ना' में राजकीय प्रथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 की बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'पढ़ना' में अधिक रूचि होना प्रतीत होता है इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कौशल 'पढ़ना' में बालिकाओं पर परिवार के अन्य पढ़े–लिखे लोगों एवं शिक्षा के क्षेत्र में बालिका शिक्षा के प्रति सजगता का प्रभाव परिलक्षित हो रहा है।

राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा–03 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर –'लिखना' के आंकड़ों का विवरण सारणी संख्या 04 में दिया जा रहा है।

सारणी संख्या 04
राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–04 के बालक–बालिकाओं की भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'लिखना' का विवरण

आयाम अनुदेशन विधि	छात्र संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (sd)	स्वत्रांश (df)	टी परीक्षण (t)
बालक	75	43.98	5.69	148	4.04′
बालिका	75	47.44	4.76		

प्राप्त टी मूल्य (4.04′) 0.01 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 04 के परिणाम से ज्ञात होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 03 की बालिकाओं का मध्यमान (M= 47.44) राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 03 के बालकों के मध्यमान (M= 43.98) से अधिक है एवं टी परीक्षण के मान (t= 4.04) में 0.01 एवं 0.05 विश्वास के दोनों स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया।

सांख्यिकी आंकड़ों के विश्लेषण से यह विदित होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययरत कक्षा 03 की बालिकाओं का भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'लिखना 'में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–03 के बालकों का भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'लिखना' से श्रेष्ठ पाया गया। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 03 की बालिकाओं ने भाषा हिन्दी के कौशल 'लिखना' में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों का अध्ययन कक्षा 03 के बालकों ने भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'लिखना' में अधिक लिखने का प्रयास किया।

निष्कर्ष

1. जनपद पौड़ी गढ़वाल के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 03 भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'सुनना' में बालिकाओं की प्रत्येक गतिविधि में सहभागिता एवं शिक्षकों का सतर्क अवलोकन 'सुनना' का दक्षता स्तर विकसित करता है।
2. जनपद पौड़ी गढ़वाल के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 03 भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'बोलना' में बालकों की अपेक्षा

बालिकाओं की दक्षता स्तर घर के वातावरण सामाजिक दबाव एवं रूढ़ीगत व्यवस्था के फलस्वरूप कम होती है। इसलिए बालिकाओं की मौखिक अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाना आवश्यक है।

3. जनपद पौड़ी गढ़वाल के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 03 भाषा हिन्दी के कौशल स्तर पढ़ना बालिकाओं का दक्षता स्तर बालकों की अपेक्षा उच्च है जिसका कारण परिवार के पढ़े लिखे लोगों एवं सरकार द्वारा बालिका शिक्षा के प्रति सजगता के रूप में परिलक्षित हो रहा है। फलस्वरूप कक्षा में उचित शैक्षिक वातावरण निर्माण तथा पाठ्य सामग्री के उचित उपयोग कर पढ़ने सम्बन्धी कौशल का विकास किया जा सकता है।
4. जनपद पौड़ी गढ़वाल के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 03 भाषा हिन्दी के कौशल स्तर 'लिखना'में बालकों का दक्षता स्तर बालिकाओं की अपेक्षा श्रेष्ठ है। बालकों को बालिकाओं की अपेक्षा अधिक समय की स्वतंत्रता मिलने के फलस्वरूप वे लिखने का अधिक प्रयास करते है, जबकि बालिकाओं में समय के अभाव के कारण लेखन में विचारों की गहनता, अनुभव, एवं परिपक्वता में समानता का अभाव है इस कमी को दूर करने के लिए उनमें शुद्ध, सरल, एवं प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।

सुझाव

1. सुनना–बोलना, सिखाना परिवार का मुख्य कार्य माना जाता है। अतः अभिभावकों को घर में वार्तालाप के द्वारा सुनने व बोलने की शक्ति विकसित करनी चाहिए।
2. सीखना एक सतत् प्रक्रिया है इसीलिए सीखना सिर्फ विद्यालय में नही होता। अतः कक्षा में सीखने की प्रक्रिया को घर में जो क्रिया कलाप हो रहे हैं उनसे जोड़ना जरूरी है।
3. भाषा शिक्षण के पाठ्यक्रम में प्रत्येक कौशल के शिक्षण हेतु भिन्न–भिन्न शिक्षण विधियों का उल्लेख किया जाना चाहिए।
4. शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि हिन्दी भाषा शिक्षा में किस तरह से कक्षा में गतिविधियां करायी जाए, जिससे बच्चों में सभी क्षमताओं का विकास हो सके।

प्राथमिक शिक्षा का देश के शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा का माध्यम इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आवश्यक है कि छात्रों को हिन्दी भाषा बोलने, समझने एवं लिखने में कुशलता होनी चाहिए। इसमें शिक्षक अपनी भूमिका उत्तरदायीत्तव पूर्ण ढंग से निभा रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *दिशा (1997) – प्रशिक्षण संद्धर्शिका, रा0शै0 अनु प्रशि0 परि0 भोपाल।*
2. *दीवान हृदयकान्त (2009) – द कैपिसिटि ऑफ द चाइल्ड, लर्निंग कर्व, अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन बैंगलौर।*
3. *एक्सपेरीमेन्ट इन एजुकेशनल, वोल्यूम xxv (II)] 211–223 आई0ई0ए0 788, जुलाई 1999 एवं जनवरी 2000*
4. *शशिकला (1999) – 'हिन्दी भाषाई कौशलों पर एक अध्ययन, पी0एच0डी0 मदुरेई विश्वविद्यालय, मदुरई।*
5. *दवे अर्चना (1997) – 'कक्षा 5 व 6 के विद्यार्थियों में सीधे शब्द दोहराने की क्षमता का अध्ययन', पी0एच0डी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।*
6. *SCERT, UK org.in*
7. *www. 7th Survey.ncert.nic.in*
8. *www.nupa.org*
9. *गैरेट हेनरी ई (1989) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।*
10. *राय, पारसनाथ (2007) – अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।*